डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा.

Topic - दक्षिण भारत में प्रारंभिक दलित आंदोलन :
एक विस्तृत अध्ययन ।
Early Dalit Movements in South India : A detailed study.

दक्षिण भारत में प्रारंभिक दलित आंदोलनों का उदय उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में हुआ। ये आंदोलन केवल सामाजिक सुधार की प्रक्रिया नहीं थे, बल्कि जातिगत उत्पीड़न, धार्मिक वर्चस्व, भूमि-अधिकार, शिक्षा और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के प्रश्नों से जुड़े व्यापक सामाजिक-राजनीतिक संघर्ष थे। इन आंदोलनों ने दक्षिण भारत की सामाजिक संरचना को चुनौती दी और आधुनिक भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों की नींव को मजबूत किया।
दक्षिण भारत के संदर्भ में विशेष रूप से Tamil Nadu, Kerala, Andhra Pradesh तथा Karnataka में दलित चेतना के प्रारंभिक रूप स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इन क्षेत्रों में जाति-आधारित दमन की जड़ें गहरी थीं, विशेषकर ब्राह्मणवादी सामाजिक संरचना के कारण।

1. सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि :

दक्षिण भारत में दलितों को 'अस्पृश्य' माना जाता था। वे मंदिरों, सार्वजनिक कुओं, विद्यालयों और यहां तक कि सड़कों के उपयोग से भी वंचित थे। कृषि अर्थव्यवस्था में उनका स्थान मुख्यतः बंधुआ मजदूरों या खेतिहर श्रमिकों का था।
औपनिवेशिक शासन ने यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से जाति-व्यवस्था को समाप्त नहीं किया, परंतु अंग्रेजी शिक्षा, ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ और आधुनिक प्रशासनिक ढांचे ने दलितों के लिए नए अवसर उत्पन्न किए। मिशनरियों ने शिक्षा और धर्मांतरण के माध्यम से सामाजिक समानता का संदेश दिया, जिससे दलितों में आत्मसम्मान की भावना विकसित हुई।

2. तमिलनाडु में दलित आंदोलन :

तमिलनाडु में दलित आंदोलन का प्रारंभिक स्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में दिखाई देता है। इस क्षेत्र में Iyothee Thass का विशेष योगदान रहा। उन्होंने 'आदि द्रविड़' शब्द का प्रयोग करते हुए दलितों की ऐतिहासिक पहचान को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया। उनका मानना था कि दलित मूलतः बौद्ध थे और ब्राह्मणवादी व्यवस्था ने उन्हें शूद्र बना दिया।
उन्होंने 1898 में 'साक्ष्य बौद्ध सोसाइटी' की स्थापना की और दलितों को बौद्ध धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया। यह कदम केवल धार्मिक परिवर्तन नहीं था, बल्कि सामाजिक विद्रोह का प्रतीक था।
इसके अतिरिक्त, Rettaimalai Srinivasan ने 'परैया महासभा' की स्थापना की और दलितों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। वे आगे चलकर B. R. Ambedkar के साथ गोलमेज सम्मेलन में भी शामिल हुए।
तमिलनाडु में गैर-ब्राह्मण आंदोलन और बाद में Self-Respect Movement (1925) के माध्यम से सामाजिक समानता का व्यापक अभियान चला, जिसका नेतृत्व E. V. Ramasamy (पेरियार) ने किया। यद्यपि यह आंदोलन केवल दलितों तक सीमित नहीं था, परंतु इसने ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती देकर दलित चेतना को सशक्त किया।

3. केरल में दलित आंदोलन :

केरल की जाति-व्यवस्था अत्यंत कठोर थी। यहाँ 'अवर्ण' जातियों को सार्वजनिक स्थानों पर चलने तक का अधिकार नहीं था।
इस संदर्भ में Ayyankali का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने 1907 में 'साधु जन परिपालना संघम' की स्थापना की और दलितों के लिए शिक्षा तथा सड़क उपयोग के अधिकार हेतु संघर्ष किया। उनके नेतृत्व में 'विलुवंडी यात्रा' (बैलगाड़ी यात्रा) एक ऐतिहासिक प्रतीक बनी, जिसमें उन्होंने सार्वजनिक मार्गों पर चलने के अधिकार का दावा किया।
केरल में Sree Narayana Guru ने भी जाति-भेद के विरुद्ध आंदोलन चलाया। यद्यपि उनका आंदोलन मुख्यतः एझवा समुदाय के लिए था, परंतु इसका प्रभाव व्यापक दलित चेतना पर भी पड़ा।

4. आंध्र प्रदेश में दलित आंदोलन :

आंध्र प्रदेश में प्रारंभिक दलित चेतना का विकास बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ। यहाँ 'आदि-आंध्र' आंदोलन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। दलित नेताओं ने स्वयं को 'आदि-आंध्र' कहकर अपनी प्राचीन पहचान पर बल दिया।
Bhagya Reddy Varma ने हैदराबाद राज्य में 'आदि-हिंदू आंदोलन' का नेतृत्व किया। उन्होंने शिक्षा, सामाजिक सुधार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की मांग की। उन्होंने दलितों के लिए विद्यालयों की स्थापना की और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चलाया।

5. कर्नाटक में दलित आंदोलन :

कर्नाटक में भी दलित चेतना का उदय मिशनरी शिक्षा और सामाजिक सुधार आंदोलनों के प्रभाव से हुआ। 'आदि-कर्नाटक' आंदोलन के माध्यम से दलितों ने अपनी पहचान और अधिकारों के लिए संघर्ष किया।
यहाँ गैर-ब्राह्मण आंदोलन तथा प्रजामंडल आंदोलनों ने भी दलितों को संगठित होने का अवसर दिया। हालांकि कर्नाटक में आंदोलन अपेक्षाकृत धीमी गति से विकसित हुआ, परंतु बीसवीं शताब्दी के मध्य तक यह एक सशक्त सामाजिक शक्ति बन चुका था।

6. औपनिवेशिक प्रभाव और राजनीतिक प्रतिनिधित्व:

ब्रिटिश शासन ने शिक्षा और नौकरियों में सीमित अवसर प्रदान किए। 1919 के भारत सरकार अधिनियम और बाद में 1935 के अधिनियम ने दलितों को पृथक निर्वाचक मंडल और आरक्षण के प्रश्न पर राजनीतिक मंच प्रदान किया।
B. R. Ambedkar के नेतृत्व में दलित राजनीति राष्ट्रीय स्तर पर संगठित हुई। दक्षिण भारत के दलित नेताओं ने भी उनके साथ मिलकर प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को उठाया।

7. आंदोलनों की विशेषताएँ :

पहचान की पुनर्स्थापना – 'आदि-द्रविड़', 'आदि-आंध्र', 'आदि-कर्नाटक' जैसे शब्दों का प्रयोग।
शिक्षा पर बल – विद्यालयों की स्थापना और मिशनरी शिक्षा का उपयोग।
धार्मिक पुनरुत्थान – बौद्ध धर्म या वैकल्पिक धार्मिक पहचान की ओर झुकाव।
राजनीतिक चेतना – पृथक प्रतिनिधित्व और आरक्षण की मांग।
सामाजिक सुधार – बाल विवाह, शराबबंदी और अंधविश्वास के विरुद्ध अभियान।

8. सीमाएँ और चुनौतियाँ :

यद्यपि ये आंदोलन महत्वपूर्ण थे, परंतु उनकी कुछ सीमाएँ भी थीं—
क्षेत्रीयता और बिखराव।
आर्थिक संसाधनों की कमी।
उच्च जातियों का विरोध।
राष्ट्रीय आंदोलन के साथ सीमित समन्वय।
फिर भी इन आंदोलनों ने सामाजिक न्याय की दिशा में ठोस आधार तैयार किया।

9. समग्र मूल्यांकन :

दक्षिण भारत के प्रारंभिक दलित आंदोलन सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण कड़ी थे। इन्होंने जातिगत दमन को वैचारिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर चुनौती दी। तमिलनाडु में वैचारिक पुनरुत्थान, केरल में सामाजिक अधिकारों के लिए प्रत्यक्ष संघर्ष, आंध्र प्रदेश में पहचान-आधारित आंदोलन और कर्नाटक में क्रमिक संगठन—ये सभी मिलकर दक्षिण भारत में दलित चेतना की व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।
इन आंदोलनों ने आगे चलकर डॉ. आंबेडकर के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर दलित राजनीति के विकास को प्रेरित किया। स्वतंत्र भारत में आरक्षण, सामाजिक न्याय और समानता की नीतियों की जड़ें इन्हीं प्रारंभिक आंदोलनों में निहित हैं।

निष्कर्ष :

दक्षिण भारत में प्रारंभिक दलित आंदोलन केवल सामाजिक सुधार के प्रयास नहीं थे, बल्कि वे आत्मसम्मान, पहचान और अधिकारों के संघर्ष का प्रतीक थे। इन्होंने भारतीय समाज की जड़ संरचनाओं को चुनौती दी और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस प्रकार, दक्षिण भारत के प्रारंभिक दलित आंदोलन भारतीय सामाजिक इतिहास की एक अनिवार्य धारा हैं, जिनका अध्ययन हमें न केवल अतीत को समझने में सहायता करता है, बल्कि वर्तमान सामाजिक न्याय की अवधारणा को भी गहराई से समझने का अवसर प्रदान करता है।